11 मानव पर्यावरण अन्त:क्रिया तटीय प्रदेश केरल में जनजीवन

स्कूल में कक्षाएँ लग चुकी थीं। शिक्षक कक्षा में बच्चों को पढ़ा रहे थे। प्रधानाध्यापक अपने कक्ष में बैठे कुछ जरूरी काम निपटा रहे थे। तभी उनके कक्ष में साधारण कद काठी वाले व्यक्ति ने प्रवेश किया। उसका रंग साँवला था। घनी काली मूछें थीं। माथे पर चंदन का तिलक व कंधे पर अंगोछा रखा था। आँखों पर चश्मा था। उसने उजले रंग की लुंगी पहन रखी थी। दूर से देख रहे कुछ बच्चे उसके हाव–भाव को देखकर आश्चर्यचकित थे। बच्चों को समझ में नहीं आ रहा था कि वो कहाँ से आए हैं?

अगली घंटी में सभी कक्षा में सूचना दी गई कि सभी बच्चे स्कूल के बाल सदन में टिफिन के बाद इकट्ठे होंगे।

टिफिन के बाद सभी बच्चे बाल सदन में जमा हुए। प्रधानाध्यापक महोदय उसी आगन्तुक के साथ कक्ष में पहुँचे। सभी छात्र छात्राओं ने खड़े होकर उस व्यक्ति का स्वागत व अभिवादन किया। प्रधानाध्यापक ने बच्चों को सम्बोधित करते हुए कहा–बच्चों, सौभाग्य की बात है कि हमारे बीच ''पी वेल्लूसुंदरम्' हैं जो केरल प्रदेश से आए हैं। ये राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यकर्त्ता हैं और अपने राज्य के बारे में बिहार के बच्चों को बताएँगे ताकि बिहार के बच्चे भी केरल के बारे में जान सकें। ये आप लोगों को वहाँ की जलवायु, रहन–सहन, खानपान, व्यवसाय आदि से परिचित कराएँगें। हालाँकि इनकी अपनी भाषा तो मलयालम हैं लेकिन ये आपकी ही भाषा में आपसे बातचीत करेंगे। आप सभी ध्यानपूर्वक सुनेंगे।

© BSTBC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

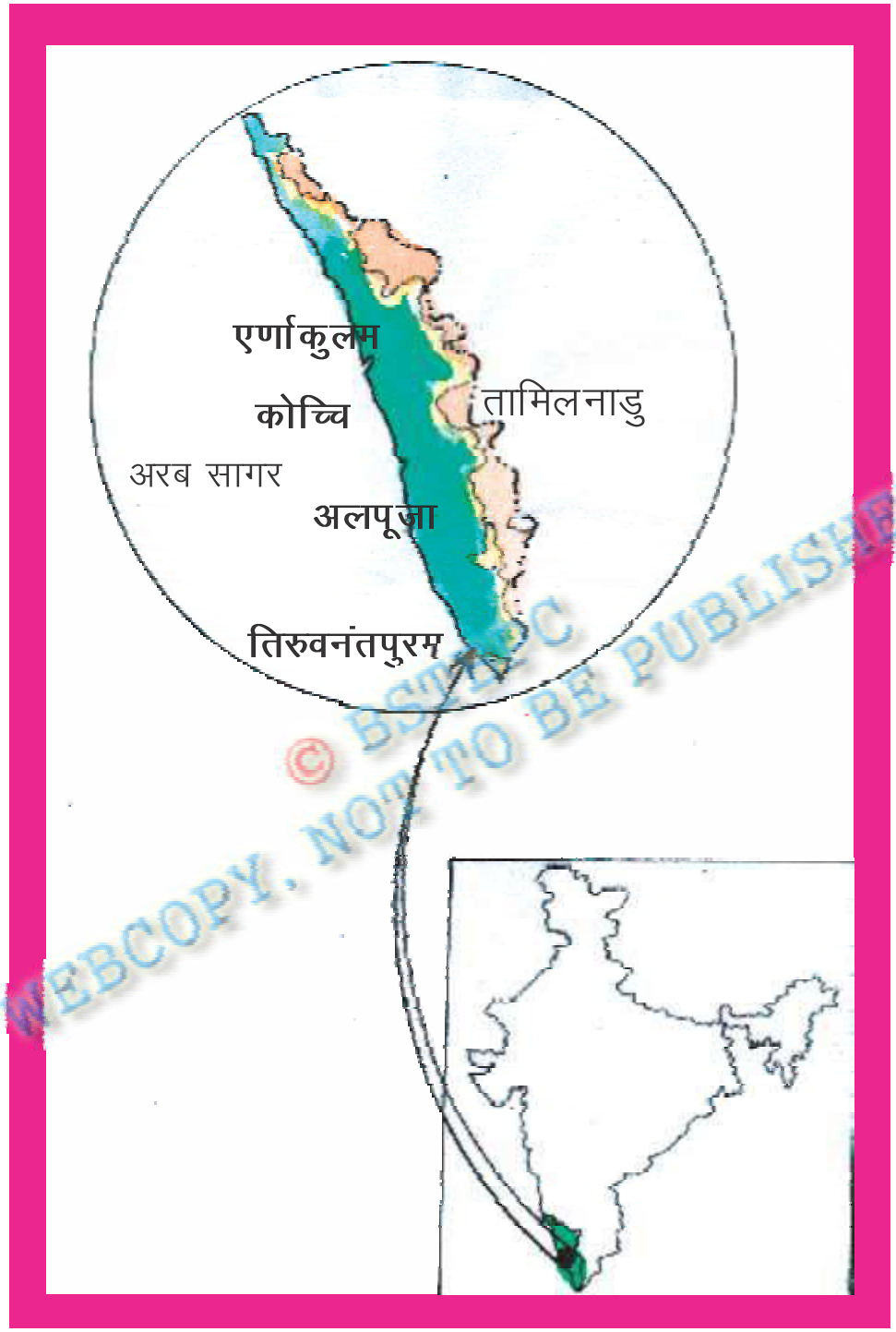

© BSTBC
WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

चित्र–11.1 केरल का मानचित्र

बच्चों ने जोरदार ढंग से तालियाँ बजाईं। पी वेल्लूसुंदरम् उठे। उनके हाथों में केरल प्रदेश का नक्शा था। उन्होंने दीवार पर नक्शे को टाँग दिया। बच्चे उनकी लुंगी और घनी मूँछ देखकर अभिभूत हो रहे थे। पी वेल्लू सुंदरम् ने कहना शुरू किया–

केरल में चिकित्सा की एक पद्धति जो आयुर्वेद मसाज पर आधारित है काफी प्रचलित हो रही है।

''बच्चों'', केरल प्रदेश भारत के पश्चिमी तट पर एक लम्बी संकरी पट्टी के रूप में फैला है। इसके पूर्व दिशा में पश्चिमी घाट की नीलगिरि और अन्नामलाई की पहाड़ियाँ हैं। पश्चिम दिशा में अरब सागर है। यह एक संकरा तटीय मैदान है जिसकी अधिकतम चौड़ाई लगभग 100 कि॰मी॰ है। यहाँ का अधिकांश मैदानी क्षेत्र नदियों के द्वारा बहाकर लाई गई मिट्टी के जमाव से बना है। इसके तीन भाग हैं–

साइलेंट वैली–पश्चिमी घाट में अवस्थित यह स्थान जैव विविधता (Bio Diversity) के लिए जाना जाता है U.N.O. ने इसकी विशिष्टता को विश्वसनीय बताया है।

केरल को God's own country भी कहा जाता है।

(क) तटीय भागों में समुद्री लहरों द्वारा लाई गई बालू द्वारा निर्मित पतला क्षेत्र जो अधिकांशतः दलदली है। यह अरब सागर के साथ–साथ एक पट्टी के रूप में पाया जाता है।

(ख) रेतीले मैदानों के पूर्वी भागों में उपजाऊ काँप मिट्टी के मैदान हैं। यह भाग बहुत उपजाऊ है।

(ग) इस मैदान के पूर्व की ओर पहाड़ी भाग है जो पुरानी चट्टानों से बने हैं। यहाँ पर्वतीय मिट्टी पायी जाती है जो अधिक उपजाऊ नहीं है।

नक्शे पर से ध्यान हटाते हुए उन्होंने कहा अब मैं आपको वहाँ की जलवायु के बारे में बताऊँगा।

बच्चे पूरे शांत भाव से सुन रहे थे। भारत में मॉनसून की शुरूआत यहीं से होती है। यह प्रदेश समुद्र तट पर बसे होने के कारण अत्यन्त नम है। ग्रीष्म ऋतु में औसत तापमान

© BSTBPC WEBCURY, NOT TO BE PUBLISHED

32°C तथा शीत ऋतु में 23°C रहता है। यहाँ वार्षिक तापांतर 2°C से 5°C तक रहता है। इस तरह यहाँ की जलवायु सम है। न जाड़े में अधिक ठंड पड़ती है और न गर्मी में अधिक गर्मी। यहाँ वर्षा मई से नवम्बर तक होती है। यहाँ औसत वर्षा 200 सेंटीमीटर से अधिक होती है। यहाँ की जलवायु उष्ण आर्द्र मानूसनी प्रकार की है।

प्रदेश का एक चौथाई भाग वनों से अच्छादित है। ऊँचे तापमान और अधिक वर्षा के कारण यहाँ सघन सदाबहार वन पाये जाते हैं। सागवान, चन्दन, सुपारी, नारियल, रबड़, बाँस के वृक्ष मुख्य रूप से पाये जाते हैं।

उन्होंने कहना शुरू किया, – केरल मुख्यतः कृषि प्रधान प्रदेश है। यहाँ की लगभग आधी जनसंख्या कृषि कार्य से जुड़ी है। यहाँ मुख्य रूप से चावल, नारियल, काली मिर्च, कहवा, काजू, इलायची, रबड़, चाय, सुपारी व गरम मसाले आदि उपजाए जाते हैं।

तटीय क्षेत्रों में मछलियाँ पकड़ी जाती हैं। मछली यहाँ की प्रमुख खाद्य सामग्री में से एक है। धान यहाँ की मुख्य खाद्य फसल है और इसकी एक वर्ष में चार फसलें तक प्राप्त की जाती हैं। इन्हीं धान के खेतों में कृषि के साथ–साथ मछली पालन भी होता है। जिससे मछलियों के साथ–साथ प्राकृतिक खाद प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त बहुत सारी नकदी फसलें यहाँ उगाई जाती हैं। जैस सुपारी, विभिन्न प्रकार के मसाले, अन्नानास, गन्ना आदि। यहाँ विभिन्न प्रकार के फूलों की खेती होती है। बागाती कृषि में चाय के बगान देखने को मिलते हैं।

सुन्दरम ने आगे कहा–केरल देश के उन गिने चुने क्षेत्रों में से है जहाँ आज भी दुर्लभ वन्य जीवन फल फूल रहा है। यहाँ हाथी, विभिन्न प्रकार के बन्दर, किंग कोबरा, विभिन्न प्रकार के पक्षी इत्यादि पाए जाते हैं। आपने दूरदर्शन पर हाथियों के झुंड जरूर देखे होंगे। सबने जोर से कहा–हाँ। हाँ, वे सब केरल के जंगलों के ही दृश्य होते हैं।

© BSEBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

थोड़ी चुप्पी के बाद उन्होंने फिर कहना आंरभ किया। यहाँ के लोग अत्यधिक धार्मिक प्रकृति के होते हैं। हिन्दु, ईसाई और इसलाम यहाँ के मुख्य धर्म हैं। जल यहाँ की संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग है। **यहाँ पर विश्व प्रसिद्ध नौका दौड़ का आयेाजन किया जाता है। कथककली यहाँ विश्व प्रसिद्ध नृत्य नाटिका है। मोहनी अट्टम यहाँ का प्रसिद्ध नृत्य है। मार्शल आर्ट के रूप में कलारीपयट्ट शैली है। मलखम्भ यहाँ का प्रसिद्ध खेल है। सबरीमाला मंदिर प्रसिद्ध तीर्थ स्थल है।**

यहाँ के लोग सेवा–भाव से भरे होते हैं। इसलिए सबसे अधिक चिकित्सा नर्स इसी राज्य से आती हैं। यहाँ साक्षरता दर भी भारत में सबसे अधिक है।

आँखों में चमक लाते हुए सुन्दरम बोले–केरल प्रदेश के तटीय भागों में मोनोजाइट, जिरकन, थोरियम, यूरेनियम पाया जाता है जबकि पूर्वी भागों में चीनी मिट्टी, चूना और ग्रेफाइट पाई जाती है।

सुंदरम् ने कहा, कि केरल में तिरूवनन्तपुरम, अलवाय, पुन्नालूर, कोजीकोड़ यहाँ के प्रमुख औद्योगिक नगर हैं। तिरूवनन्तपुरम में सूती कपड़ो, नारियल का तेल, साबुन, साइकिल ट्यूब, काँच आदि के कारखाने हैं। पुन्नालूर में कागज तथा अलवाय में

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

चित्र–11.2 केरल की नाव

अल्यूमीनियम बनाने के कारखाने हैं। कुटीर उद्योग में नारियल के रेशे से रस्सी, पाँव पोछ, पायदान, टोकरियाँ आदि बनती हैं। इसके अतिरिक्त रेशम, चीनी मिट्टी के बर्तन, प्लाइवुड, रासायनिक खाद आदि के भी कारखाने हैं।

अब आइए केरल की बस्तियों की बात करें। बच्चों में उत्सुकता बनी हुई थी। यहाँ की अधिकांश जनसंख्या गाँवों में निवास करती है। तट के किनारे जनसंख्या दूर तक फैली है ग्रामीण क्षेत्रों में 2000.4000 व्यक्ति प्रति वर्ग किलो मीटर में निवास करते हैं। यहाँ बस्तियों का बसाव बहुत ही घना है। इनका क्रम लगातार दिखता है। लम्बवत बनावट के कारण बस्तियों का बसाव भी लम्बी पट्टी के रूप में दिखता है। यहाँ आम तौर पर पक्के दीवारों वाले मकान दिखाई पड़ते हैं। छत में खपरैल, एस्बेस्टस या टीन तथा कंकरीट इस्तेमाल होते हैं। यहाँ पत्थरों को काटकर ईंटें बनाई जाती हैं।

यहाँ रेल, सड़क वायु मार्ग के अतिरिक्त नदी मार्ग से अधिक परिवहन होता है। यहाँ झील, नहरों तथा नदियों का जाल बिछा है। यहाँ नौका और मोटर नौका ;स्टीमरद्ध का उपयोग अधिकाधिक होता है। यहाँ कश्मीर की भाँति हाउस बोट भी मिलते हैं। इनमें बहुतायत विदेशी पर्यटक आकर ठहरते हैं। यहाँ की बसों की खिड़कियों में शीशे नहीं होते बल्कि चमड़े के पर्दे लगे रहते हैं जिसे चढ़ाया–उतारा जा सकता है। पर्यटक विलासितायुक्त नौकाओं में भी भ्रमण करते हैं। आपको केरल में लैगून झीलें खूब मिलेंगी। यह कह कर उन्होंने थैले से एक पोस्टर निकाला और सबको दिखाते हुए बोले ये झीलें वस्तुतः बालू का स्तूप (रेत की दीवार) के द्वारा समुद्र से अलग हो गए हैं। इन झीलों को आपस में एक–दूसरे से जोड़ दिया गया है और इस तरह की झीलों में ही नाव से एक कोने से दूसरे कोने तक जाया जा सकता है। पोस्टर में झीलों में लम्बी–लम्बी नावें दिखाई गई थीं, तस्वीर बहुत ही मनोहारी थी।

यहाँ चावल, इडली, डोसा, सांभर, पुट्ट, उत्पम, अवियल, उपमा, अटपम एवं नारियल से बनी खाद्य सामग्री, मछली एवं समुद्री उत्पाद प्रचलित हैं। यहाँ केले के पत्ते पर भोजन परोसा जाता है।

© BSNBC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

महिलायें साड़ी, पेटीकोट एवं सूट पहनती हैं। पुरुष कमीज और लूंगी ;मुंडद्ध पहनते हैं। सोने के गहनों का प्रचलन अधिक है। पुरूष धोती–कुरते का प्रयोग करते हैं जो प्रायः सफेद होते है धोती को थोड़ा ऊँचा बाँधते हैं। महिलाएँ साड़ी–ब्लाउज पहनती हैं। पुरूष माथे पर चंदन का तिलक लगाते हैं जबकि महिलाएँ विभिन्न फूलों के गजरों से बालों को सजाती हैं। छाता यहाँ की वेश–भूषा का अभिन्न अंग है। जो परम्परागत रूप से नारियल के पत्ते से बनाया जाता है। हालांकि आधुनिकता के कारण इसका स्थान कारखानों में बने आधुनिक छातों ने ले लिया है। छाता का उपयोग आपलोग भी तो बरसात में करते ही हैं, है न ? सभी बच्चे एक साथ बोल पड़े–हाँ। अब आप बताइए केरल के बारे में जानकर आपको कैसा लगा?

सभी बच्चों ने जोरदार आवाज लगाई–बहुत अच्छा। नंदन उठकर बोला, सर आपने हम लोगों को केरल प्रदेश के बारे में इतना बढ़िया ढंग से बताया है जैसे हम वहाँ घूमकर आए हों। एक–एक बातें दृश्य के रूप में घूम रही हैं। आपको बहुत–बहुत धन्यवाद। सबने जोरदार तालियाँ बजाईं।

प्रधानाध्यापक ने सुंदरम् साहब को धन्यवाद दिया और कहा कि आगे भी ऐसे कार्यक्रम चलाये जाएँ। सुंदरम् साहब की बातों पर चर्चा करते हुए विद्यालय से बच्चे बाहर आने लगे। आज उन्हें देश के एक प्रांत के बारे में विशेष जानकारी मिली थी। सभी खूब खुश थे। सुन्दरम ने बच्चों को कहा कि आप भी किसी दूसरे राज्य में जाकर अपने राज्य के बारे में जरूर बताइएगा।

© BSTBPC WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED

अभ्यास

i. सही विकल्प को चुनें –

(1) केरल प्रदेश की जलवायु है

(क) समशीतोष्ण (ख) शीतोष्ण (ग) उष्णार्द (घ) उष्ण

(2) केरल में नहीं ऊपजाया जाता है–

(क) कहवा (ख) काजू (ग) जूट (घ) इलायची

(3) साइलेंट वैली स्थित है–

(क) पूर्वी घाट में (ख) पश्चिमी घाट में (ग) कृष्णा घाट में (घ) कावेरी घाट में

(4) सबरीमाला क्या है ?

(क) तीर्थ स्थान (ख) पर्यटन स्थल (ग) नौका दौड़ (घ) एक प्रकार का नृत्य

ii. सही मिलान करें–

(क)	मलखंभ	(क)	एक प्रकार की भाषा
(ख)	पश्चिमी घाट	(ख)	एक प्रकार की चिकित्सा पद्धति
(ग)	केराली मसाज	(ग)	एक प्रकार का खाद्य पदार्थ
(घ)	उत्पम	(घ)	एक खेल
(च)	मलयालम	(च)	नीलगिरी की पहाडियाँ

iii. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. केरल प्रदेश की जलवायु और वनस्पति पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
2. पी. वेल्लू सुंदरम् ने केरल की किन–किन विशेषताओं का जिक्र किया?
3. केरल में उत्पादित प्रमुख मसाले कौन–कौन से हैं?
4. लोग पर्यटन के लिए केरल जाना क्यों पसंद करते हैं?
5. केरल के खानपान बनाने में किन खाद्य पदार्थों की जरूरत होगी–सूची बनाइए।
6. बिहार और केरल के पहनावा में क्या–क्या अंतर है?
7. केरल व बिहार के भोजन में कौन–सा खाद्यान्न समान है ?

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

iv. क्रियाकलाप –

1. अपने मुहल्ले के दुकनदार से मसालों की आपूर्ति का स्रोत पता कीजिए।
2. केरल के नौका दौड़ का आयोजन अपने राज्य में करने के लिए क्या करेंगें ?
3. राष्ट्रीय सेवा योजना के बारे में पता कीजिए। जानकारियों को लिखकर कक्षा में प्रदर्शित कीजिए।

♦♦♦

© BSTBPC
WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED